



शिवनाथं प्रणम्य ॥ गुरुं हृदि गुरुं नमस्कृत्य विष्णुं वाहनानिवा ॥
 धिवांसं पवित्रानि योजनीया यथाविधि ॥ ॥ कथं कथं मित्रं विद्य
 कं निमेषेन याय ॥ पूर्वदिक्षं दक्षं यथा ॥ ततश्चात्मानं नित्यं क
 म्पदि कुं कृत्वा ॥ ॥ ततश्चैव विप्रं य ॥ ॥ कृत्वा यथायमांशं विवर्त्त
 ॥ नित्यं नैमिषं कर्माच्च न याय ॥ ॥ तदनेन च ॥ दक्षं तानं ॥ यं चाम
 तस्तानं वन्दते सिद्धं यस्तु यवीत माला पृथक्काया वदं वयं जनी
 नित्यं कुर्महे ॥ महायागं पूजायाय ॥ कलमं कुरु कुरु कुरु सगुण

सिन्धुमूढ मालक जा पूजा वाय क वा वाय वलि वाय धन वाय विधि
॥ ॥ यजमानस्य आगिति आदि न स ग र्ण पृथग् दू वा रुत विद्य ॥ पुत्रस्य
आमनुष्य वाक्य ॥ १०७ ॥ यजमान पूष्य राजन याचक ॥ पुत्रस्य अथो
दि सूर्यार्घ्य कृत्वा ॥ पादयुक्तस्य ॥ शितत्वा च मय ३ ॥ सर्वजनस्य देवा
वर्न कृत्वा ॥ ॥ जं अश्व सुमनुसति पुत्र नमस्कार कृत्वा ॥ कलवकुम्भ
न्यास कृत्वा ॥ जल पात्र अर्घ्य पात्र पूजा ॥ हस्त पुद्गि आत्म पूजा ॥ म
लिनिय ८० ॥ यत्रैव सिद्धि विद्य ॥ मूलाक्ष ॥ जयकार ॥ गोश्याप

एकमात्रति ॥ विन्दु उर्य ॥ १॥ मधनता मूलादि रि १ रुत ॥ तत्र न यत्र
४ युता त्यादि ॥ ॥ श्रीसम्बल त्यादि ॥ आदि देव वि वलिविद्य ३ ॥ ततादि
गपुजन ॥ पूर्व वक्तु म ॥ वलि ह उकादि ॥ ॥ मिदिन पूजा ॥
अथ कल म चन याय ॥ ॥ जं ह १ श्रीसम्बल कल मय पाद का पूजा
या मि ॥ ॥ जं ह दयादि व उ म मावा म धन म धा वलि ॥ धन कल मय
जा ॥ ॥ तता क म पूजन ॥ ॥ जं ह १ श्रीकल क माये पाद का पूजा या मि
॥ अथो नारु मनु ॥ ॥ सां ह द यादि न पूजा याय ॥ ॥ त्यादि व उ म मावा म

एतत्पवित्रं कं गन्धधूपनं तथादि यं । यं वा य वा न यं यं यं वलि पूजा यथा
 विधिं ॥ तं मया रुकि नातस्य यदि कंदं गुरुं रुवं ॥ ॐ नमो विष्णवे ॥
 मन्त्रं गवाक्ष ॥ ॥ तं गन्धधूपनं यवित्रं पूजनं ॥ गन्धं कस्तूरि कर्पूरः
 श्रीरुद्र उग्रं गंधवनं तालिगं वानं पर्यं गुं दानं रुद्रिदा ॥ यं
 सवत्सवं पूजायाय ॥ रुकादि सकात्राक अद्यान वज्र वतीनि ॥ ग
 यती ॥ यत्तु मीन पूजायाय ॥ वलि ॥ आवाहनादि धनं मूढा ॥ ॐ नमो
 गन्धधूपनं कं पूजा ॥ ॥ नमः ॥ यवित्राधिवासनं कमपविद्याति नंद

यवित्रा न यव आत्मधं वरुं गन्धधूपनं यवित्रं पूजाय ॥ अथ गन्धधूपनं ॥ ॐ नमो
 गन्धधूपनं यवित्रं पूजाय विधिः ॥ ॥ नमः ॥ यवित्रं पूजनं ॥ पूर्ववत्स्कात्र
 ॥ कौं द्यादि यत्तु मीन पूजा ॥ कमया अक्त वरुं माल कलिग
 स्वन साक्ष ॥ ॐ नमो ॥ आनन्दं वराय सं ॥ यवित्रं कयाय ॥
 अद्यान वज्र वतीनि ॥ गन्धधूपनं ॥ कूलगमयती ॥ ॐ नमो कृत्तिकाय
 विष्णवे ॥ विष्णवे ॥ यत्तु मीन पूजा ॥ ॥ द्वादशं मीनं ॥ स्कात्रं यत्तु मीन पूजा
 ॥ ॐ नमो ॥ यवित्रं कयाय ॥ यथा इका ॥ ॐ नमो कृत्तिकाय पूजनं विधिः ॥

कृतयूरगदं मसु गामि गतायां वज्रतस्तथा। दायवंगतासु सुगामि क
लो कयां सभवेव॥ अंकारं पथमक तु द्वितीयं साम दं वता॥ रती
यं वक्त्रि दं वत्वं वउ। थवु क्क दं वता॥ यं वमंता गदं वत्वं व व मं वमि
खि व्जं॥ सके मं सु यदं वत्वं अ व मं व सदा गि वं॥ न व मं सर्व दं वा
नां तं न तां च वि। षे त॥ वृठिका उंता म वि य गु उं न क उ या द
ल्या ख ते श्वा॥ ॥ पूनः सां द्वि दं वा च नं कृत्वा॥ यति अ य वा स न
वा इ की॥ ॥ तता आ म नु न वा र्थ य॥ ००॥ जं ज के ला स यी ॥ ० व्या दि

॥ अथ॥ यथा साम ल्थि र्गं का व थ॥ स यानं॥ या गि न्या दि आ म
नु धि स्तान वि यत्वं॥ अ धि वा स म्पू जा सर्वं य त्रि य लू म सु॥ अं ति य दि
गु धि वा स न वि धि स मा क॥ ॥ ततः पुनः पुनः॥ नि ल्य क म्प चि
नं कृत्वा॥ अथ नि मि लि क दं वा च नं॥ स यार्थ॥ गु न या दे य का ल्या
य म्प॥ आ ग म लु ल मा स्ति त्॥ तता न्या सा दि क व व क्ता अ दि दं वा च
न क मं ध सा॥ अ नि त्या च नं कृत्वा॥ ॥ वृठिका लं सा य वि धान थं॥ पु
नः ज ला र्थ पा र्थ ल्य क॥ पु र्व व० वृठिका न्या स न ल्थ धनं॥ किं कि

श्री ॥ गंगादेवाय नमः ॥ कर्मवृत्ति का च्छाया दं ॥ ॥ जलयात्रया तु न
 अंगुलि न गंधि न ॥ जंज दं ॥ जलयात्रया विष्णु कथा इका ॥ जा व
 उद्गमावाञ्छा धनमदी ॥ वलि ॥ मथयी ॥ कडिकाय विष्णु दंति
 आत्मादि सर्वद्वय यथा कथं ॥ नति जलयात्रया ॥ ॥ अथ
 यात्रया अंगुलि न तु न यन्त्रि ॥ अथात्रा मुगमाक्ष ॥ जंज सं ॥ धी
 अथ यात्रया विष्णु कथा प ॥ वलि ॥ सां य उद्गमावाञ्छा यानि मजो ॥
 नति अथ यात्रया ॥ ॥ हृत्पुष्टि आत्म पूजा ॥ चन्द्रनाक गति

[illegible]

दीर्घार्थ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नावाय मम अंगुलि १७ उं २० य
निक ४ ॥ उं क्रौं स १ नमो नावाय यथा यवि विष्णु तन क्रौं स्वाहा यवि क यो य
॥ वलि ४ ॥ क्रौं ष उं ममावाय नं स्वचक्र मदीर्घार्थ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
नं ॥ ॥ नृदया अंगुलि २० उं २० यं वि १० ॥ उं क्रौं अधो वहा अधो
नं क्रौं धात्र २० नं क्रौं सर्वतः ॥ क्रौं सर्वः सर्वं क्रौं नृदयं क्रौं धीमहि
मिवाय यवि क यो य ॥ क्रौं ष उं ममावाय विष्णु तन मदीर्घार्थ
७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय अंगुलि २० उं २० यनिक १२ ॥

उं क्रौं स १ ग्राम् अंगुलि १० यय अमृती मम हारं नवाय मम हारं श्री गणेशाय
दिनाय श्री सदा मिवाय यवि क यो य ॥ वलि ४ ॥ क्रौं ष उं ममावाय १०
नमदीर्घार्थ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ अधो वहा अधो
२० यनिक ४ ॥ उं क्रौं अधो वहा अधो वहा नं स्वचक्र मदीर्घार्थ ७ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
क्रौं स क्रौं नृदयं क्रौं धीमहि स्वास्तु नृदयं नवाय श्री सदा मिवाय य
वि क यो य ॥ वलि ४ ॥ क्रौं ष उं ममावाय १० यनिक ४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय
धात्रा चर्त ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय अंगुलि २० उं २० यनिक ४ ॥ वं ७ मन्त्रो सुं धी

श्री गुरुवाय यवि उ कयाय ॥ वलि ॥ जों षउ मीमावा घुरधन मूडी दर्शय
 ॥ नूति नूति नूति नूति ॥ सदागिव स अरुलि २० तु २० यन्कि ३ ॥ जें ५
 नूति नूति नूति श्री सदागिव यवि उ कयाय ॥ वलि ॥ जों षउ मीमावा अ
 ॥ नूति नूति नूति नूति नूति नूति ॥ अथ विदवा
 दि य विगुवा रुन ॥ कृणया अरुलि १० तु २० यथि ५ वंकि ५ ॥ जें ५ का
 नूति नूति नूति नूति नूति नूति ॥ कृणया लाय यवि उ कयाय ॥ वलि ॥ जों षउ मीमावा
 अ दलु मूडी दर्शय ॥ नूति नूति नूति ॥ वद कया अरुलि २० तु २०

यन्कि सम ॥ जें ५ श्री कौ कूल पूठ वद कनाथ यवि उ कयाय ॥ वलि ॥
 जों षउ मीमावा अ नूति नूति नूति नूति ॥ नूति वद कनाथ ॥ नमया
 अरुलि २० तु २० यन्कि सम ॥ जें ५ नमं गी गूं नें नमं गी गूं नें श्री कूल ग
 गुरुवाय यवि उ कयाय ॥ वलि ॥ नमं षउ मीमावा अ गज मूडी दर्शय ॥
 नूति नमं नूति ॥ जय मारु थ व थ व ॥ अथ गमादि ॥ नूति वि बो दे नूति
 ॥ ॥ यि पुद्धि या अरुलि २० तु २० यथि २ ॥ मनु थ व शक ॥ जें ५ दं २
 श्री यि पुद्धि रु द्वा व काय यवि उ कयाय ॥ वलि ॥ जों षउ मीमावा अ य
 (धनू)

प्राविंजसं आनन्दसकिरेत्रवानन्दवीवाधियतथधीविश्रात्राजं
वीहं० आनन्दयविणुकयापू॥ वलि॥ कंषउ० अनासपूजा॥ आ
वाअ० धनूयातिमूर्धादण्य॥ ॐ निजासयविण॥ ॥ कलमया
तअंगुलि २० ३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १०० ॥ मनु॥ जैजं कृष्णं धीसम्यक्
लक्षययविणुकयापू॥ वलि॥ कंषउ० अमावा० अ० धनूया
दण्य॥ ॐ नि कलमवर्त॥ ॥ कृष्णया अंगुलि २० ३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १००
४ वकि ४॥ मनु अर्धानाम॥ जैजं सं० आनन्दसकिरेत्रवानन्दवी

वाधियतथमं हं० श्रीकलकृष्णहृदयकार्ययविणुकयापू॥ वलि॥
॥ कंषउ० अमावा० अ० कृष्णयातिमूर्धादण्य॥ चन्दनादिसंपूज॥
ॐ नि कलमवर्त॥ ॥ महायात्रया अंगुलि १० २० ३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १००
॥ मनु॥ अर्धानाम० वलीग॥ द्वादशमी॥ जैजं ज्ञांठं याकिनीद
वीशीमहायात्राययविणुकयापू॥ कंषउ० अमावा० वाअ० धनूया
तिमूर्धादण्य॥ ॐ नि यात्रपूजा॥ ॥ स० गन० या अंगुलि १०
३० ४० ५० ६० ७० ८० ९० १०० ॥ मनु॥ जैजं हं० अ० गन० अ० वि० जी० वी० ग० स० गन०

257

ययविठकयाय ॥ वलि॥ ऊँ ष उ झ मा वा अ ध नू मू र्जी द र्ग थ जा नू
ति स (ना न॥ ॥ ततः षा टा न्या र्म कृत्वा ॥ वती मि. कल व कु र्मि. द्वा द
ष म झ. ष उ झ. माहिती. मय ना मि. रि वि श्या. धा त्रि का ष क. ष ट् डू मि
वत्त र्प य क. यन्ति. ए का कनी. य च य म व. न वात्मा. ए न न्या स शा
उ नू र्प कि या अं गु लि २० गुं २० यन्ति १ वी कि १ ॥ म लु थ व रु क ॥ नू ज
दं १० गु नू र्प कि रु हा न का य य वि ठ क या य ॥ वलि॥ ऊँ ष उ झ
मा वा अ ध नू मू र्जी ॥ आ वा हु न च न्द ना दि ष जा ॥ ॐ मि गु नू र्प कि य उ

काय ३

[illegible]

ॐ तिष्ठीक ४४॥ ॥ ततामा नृ कार्त्तन ॥ वक्रायणीया अंगुलि ८८
 २०॥ यन्त्रि ४॥ नुं ज अ धा न अ मा ध व न द वी म ल ॥ वक्रा (ये) अलिना
 अरु न व र न वा य य वि रु क या य ॥ वलि १॥ अ य व ॥ उ म मा वा अ रू स
 मूडा ॥ ॥ मा द धनी या अंगुलि ८८ २०॥ यन्त्रि ९॥ नुं ज अ धा न अ मा
 ध व न द वी वि म ल क ॥ मा द धनी व न र न वा य य वि रु क या य ॥
 वलि १॥ कां ष उ म मा वा अ रू अ य मू डा ॥ ॥ को मा नी या अंगु
 लि ८८ २०॥ यन्त्रि ९॥ नुं ज अ धा न अ मा ध व न द वी वि म ल ॥ को
 विपुत्र २

पञ्चमः

गणिकमहा २

गणिक ४

मा नी व लु र न वा य य वि रु क या य ॥ वलि १॥ वां ष उ म मा वा अ न रू
 नी मू डा ॥ ॥ वे षू वी या अंगुलि ८८ २०॥ यन्त्रि ४॥ नुं ज अ धा न अ
 मा ध व न द वि म ल ॥ वे षू वी का ध र न वा य य वि रु क या य ॥ व
 लि १॥ टं ष उ म मा वा अ रू ग कि मू डा ॥ ॥ वा ना दी या अंगुलि ८८
 २०॥ यन्त्रि ४॥ नुं ज अ धा न अ मा ध व न द वि म ल ॥ वा ना दी उ म रू
 र न वा य य वि रु क या य ॥ वलि १॥ तं ष उ म मा वा अ रू काल मू डा ॥ ॥
 वे षू वी या अंगुलि ८८ २०॥ यन्त्रि ४॥ नुं ज अ धा न अ मा ध व न द वि

मलयां तुं ज्ञायते कपाले न वाय पवित्र कयाय ॥ वलि ॥ यं ध
 उ मं ॥ मा वा अ ग ज मू र्जा ॥ २ ॥ वा म लु म या अ गु लि ६ उ २ १ य नि ७ ॥
 तुं ज अ धा न अ मा ध व न द वि म ल म्मा वा म लु म य री व न र व वा य
 प वि र क या य ॥ वलि ॥ यं ध उ मं ॥ मा वा अ ग ज मू र्जा ॥ क या म म हा
 स जी या ॥ अ गु लि ६ उ २ १ य नि ७ ॥ तुं ज अ धा न अ मा ध व न द वि
 म ल म्मा म हा ल श्री स हा व र व वा य प वि र क या य ॥ वलि ॥ नं ध
 उ मं ॥ मा वा अ ग ज मू र्जा ॥ न्ति मा न क र्वा न ॥ ॥ रु ग व ती

खं १

या अ गु लि ६ उ २ १ य नि ७ ॥ इ थ ल मा न ॥ म लु थ व र क ॥ तुं ज अ धा
 वा ज य द धुं तुं उ य व ली वि य म द नी हं हं स दा न क २ र्वा मा रं स ४
 म लु र व न न उ य व लु म वि र क या य ॥ वलि ॥ तुं ज अ धा न अ मा ध व न द वि
 वा म लु म य व लि गृ ह २ र्वा हा ॥ ज धि उ मं मा वा अ या नि ७ मू र्जा ॥
 न्ति रु ग व ती स ॥ ॥ वा ग ध व ती स ॥ अ गु लि ६ उ २ १ य नि ७ ॥ स म ॥
 म लु थ व र क ॥ तुं ज वि कि टि वि कि ती कू ट क लु वा ग ध व ती व द म र
 ना वि का वि व प वि र क या य ॥ वलि ॥ ज धि उ मं मा वा अ या नि मू र्जा



[illegible]

मातृगवती ॐ कृडि काये द्वां द्वां द्वां धान अ धान अ धान नाम रवी कि
ति २ वि च पाय ॥ जे ५ न मातृगवती ॐ कृडि काये द्वां द्वां द्वां द
अ धान म अ धान म शि कां कां कि ति २ वि च पाय ॥ जे ५ न मातृग
वती नि सि द्ध द्वां द्वां कृडि क द्वां द्वां द्वां स्व ग न धान अ धान म
शि कां कां कि ति २ वि च पाय ॥ जे ५ द्वां द्वां द्वां द्वां द्वां ४ वि शान त्वा य
वि रु क पाय ॥ ॥ आत्म तत्त्व या अ तु लि २१ तु २० य कि ३८ इ ५
ल मान ॥ मनु अ रु न प्र वा रु के ॥ ८ ॥ जे ५ अँ अँ अँ अँ उँ उँ अँ अँ

उद्दिमावाय यानिमूर्त्ता ॥ अरुणन्नादि ॥ ॐ नि कु मया ॥ ॥ तिरवः
अया अंगुलि २१ तुं २१ ग्रन्थि सम ॥ मनु थे व श क ॥ जेँ ज सं ले श्री न
दख लु बुद्ध ख लु मा नु ख लु मनु ख लु रि ख लु अ ल हान का ये य वि र
क पा प ॥ बलि ॥ सां ष उद्दिमावाय तिरव लु मूर्त्ता द ल थ ॥ अरु ग
न्नादि ॥ ॐ नि तिरव लु ॥ ॥ मूल कान या अंगुलि २१ तुं १०८ ग्रन्थि
४ व कि ८ ॥ मनु मालिनी ॥ जेँ ज ने थें सें जूं ६ टैं वं प्र लं उड्डुं ॐ वं कुरं
गं घं दं ॐ औं वं रुं यं उटं ०५ अं वं जं टं पे दं सें ज १ कं लं आं वं रुं मे

[illegible]

झों धात्र नूपाये झों धात्र धात्रा मखी स्तों धात्रा मखी झों नूद नूद स्तों
हो मली माये झों दू हो वनी शीष धाये झों दू हर्म झों वा मनीये झों
दूद विव दू स्तों विव नाये पाय ॥ द्वादशा म ॥ नुं ज स्तों स्तों स्तों स्तों
स्तों स्तों स्तों स्तों स्तों स्तों स्तों ४ पाय ॥ यउ म ॥ नुं ज स्तों स्तों स्तों स्तों
स्तों स्तों ४ पाय ॥ वकु ॥ नुं ज झों धां उद्व वकु झों धां पूर्व वकु दू शी वकु
ही वकु झों धां उरु व वकु झों धां पाथ्य म वकु ५ ॥ धी पना म्ये न वकु
शी मल ल्हान पविउ क पाय ॥ ॥ गंगा वना न या अं गुति २१३

५४ यन्त्रि १ वकि १ ॥ मनुथ वश क ॥ नुं ज अ धात्र झों ध धात्र झों धा
त्र धात्र न नू दू दू सर्व न ॥ सर्व १ सर्व दू दू स ॥ झों नूद नू यं ५ १ पा
य ॥ नुं ज वकु वकु नी झुं ज लाका कर्षणी झों कामा गदावणी की मी
महा श्रा र कारणी नुं मी स १ धी पाय ॥ नुं ज न मारु न वनी झुं कूडि
काये झों झों दू धात्र अ धात्र अ धात्रा मखी स्तों स्तों कि नैर विध्या
य ॥ नुं ज दू १ ज्ञान नन्द गी कि ले न वान नन्द वी नाधि पन यं स १ पाय
॥ ॥ नुं ज स १ ज्ञान नन्द गी कि ले न वान नन्द वी नाधि पन यं श्री विद्या

वाङ्मयनी हं ले पाय । नैं ऊँ कौं कौं कौं कौं सः गी मवता वय विर
 कयाय ॥ वलि ॥ नैं ऊँ हं ले आनन्द हं व वाय सें ले आनन्द स्वरी गी
 सहि ताय वलि गृह २ खादा ॥ कौं षउ म मावा क विरतथा निमडी
 दर्शय ॥ अरु गन्वादि ॥ ॐ नि मल लानया ॥ ॥ पूर्य स्वरीया
 उं २० यन्कि सम ॥ मनु ॥ नैं कौं रं य ॥ य (स्व वाय नम ॥ नैं कौं रं
 म ॥ पूर्य स्वरीया पविश क या उप ॥ ॥ वलि ॥ षउ म माडा ॥ ॥ उ
 नि (स्व वाय नी मा उं २० यन्कि स म ॥ नैं कौं रं
 ॐ

३५०/२
 मनाय नम ॥ नैं कौं रं य ॥ निर (स्व वाय य पविश क या प ॥ वलि ॥
 मउ म ॥ ॥ उ म का कु ली या उं ३५० यन्कि १५ ॥ अथ वा उं
 २३४ ॥ यन्कि सम ॥ नैं कौं रं य ॥ म ॥ कौं कौं कौं कौं कौं कौं कौं कौं
 स्व वाय य म का ल्ये नम ॥ उं कौं य ॥ सिद्धि क वालि कौं कौं कौं
 कौं नम ॥ खादा य म का ल्ये य वि र ॥ कयाय ॥ वलि ॥ षउ म
 ॥ ॥ सिद्धि ल श्री या उं ५०० नव थान ॥ अथ वा उं १०५ यन्कि २ ॥ मा
 लामनु ॥ उं कौं रं हं हं कौं कौं नम सिद्धि ल श्री द वी पविश क या प ॥

मलं कायथमनजुहि २ रुगवन्तु वक्रवावी वनाम सदायसु गीवस
श्वं अमी तानागयविज्ञान वदवे वक्रवादिन गत्रु उ अयन अजनाम
समृद्धिवायु व (गर्ग) गत अस्मि न्यूजा पहात्र विध्य भागं गृह्ण २ अना
गं मू २ २ तुन २ चिन्द २ एकवीन उ गते ४ यति सत्त्व न वायु वे (ग
र्ग) खे अ वा न य २ पुन य क मरिचा न चिन्द २ रुगवान् अ मू क मू
विज्ञापयति कौ कौ कौ यो यो २ २ रुग् स्वा हा हन ते वे व त हा न क
पविशुक या व ॥ वलि ॥ व उ मी विष्णु न मू ॥ ॥ दाहया पू २ उ

रायन्कि सम ॥ मनुष्या ज सं २ सं सानि कलाय सुवर्ण दानाय य
विशुक या व ॥ वलि ॥ सां व उ मी मा वा अ (धन मू डा द न यि ७ ॥ ॥ नि
दाहया ॥ ॥ आनया तं थ थ ॥ ॥ अ दाहया २ ४ ४ यि ४ व वि
४ ॥ मनु ॥ ज सं म म म लुयी १० ह्यादि ॥ अ दाह पविशुक या व ॥ ॥
उ अ य वा ला ह क ल्य ॥ पविशु ना ह नार्थ श्री पन्थि म ऊ षा म्ना य श्री क
ऊ ष्वा न न्दे ना थ श्री क डी सहि ता य सा मी य स ग ल पविवा वा य अ
दाह पविशुक या व ॥ वलि ॥ सां व उ मी मा वा अ (धन मू डा द न यि ७ ॥ ॥

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अलिंदुग्धादिर्नखनिष्पद्यते ॥
 ॥ उज्ज्वला वाहकल्यंखादि ॥ अज्यादि ॥ उज्ज्वल अथयिंदवदवंगपू
 र्णार्थमवगात्रकं ॥ गृहाभ्यर्चनमया मर्त्यसुखीदयत्रमंश्वरी ॥ यविजा
 प्राहनीर्थे हे सर्वकामरुलपुदं ॥ इत्युच्यते ॥ सनामर्चयसीदलं
 कजंश्वरी ॥ यविजुनाहनार्थं ॥ दमर्चस्वाहा ॥ महावलिसमहा
 वलिमनुनविय ॥ कंकिति ॥ उज्ज्वलममममनुपी ॥ १० ॥ खादि ॥ नदधुवि
 वलिसविय ॥ कंकिति ॥ कर्मचिंतनकुमंश्वलिविय ॥ त्याकमहाव

लिनयनकं ॥ यपदीप ॥ हृद्यमानंखादि ॥ ॥ मलुलजायका
 लकिसे ॥ सनानसुख ॥ उवस्तुति ॥ अथ उमलुलाकारंखादि
 ॥ वन्दसदातिदव ॥ पीठिका ॥ माहामाया ॥ सखर्ल ॥ यदादा
 स्मानदं वदक्षिण ॥ ॥ पुनः केलीसपीठिकाय ॥ १० ॥ अमलि
 तासिदं वस्यं कुरु कानांममन्विता ॥ वक्ष्मादि समायुक्तं यागव
 न्दसमन्वितं ॥ वत्सनांमहादेवीनिवारुमवर्गंमया ॥ गगन
 कानि विना निरुपानि सगर्गंमया ॥ यायन्ति हविषुर्द्युर्थंरुम

तीयत्रमंश्वरी । यतिद्वगन्धर्वं ऊ कावत्तनानसुसुर्व । अथ म
 म्मादि । घल या ऊ गुलि ६ उं २१ गुन्कि २ । उं १ हं २ घ
 ६ पविशुक पाय ॥ ७७ ति दल या ॥ ॥ उमत्रया ऊ गुलि ६ उं २१ गु
 नि ४ । उं १ हं २ उमले पविशुक पाय ॥ ७७ ति दम न या ॥ ॥ य
 थान कि द व द कि ६ ॥ ७७ द वा नी वा दि ॥ आ वा र्थ द कि ६ ॥ त्वं गति
 या दि ॥ क मा लु ति ॥ काला ती त स व ति र्थे द्वे मि सु ॥ ॥ ७७ द म या
 पृथ धूप दी प गंध वन्दना कन य स्था प वी त ति न्द्र ना ऊ न रु त

पकान्नने वं शार्थ जलि वलि रुन्नु समं गी मा सादन सा यत्क न ल य
 वि शा ना रु ना य धी के डि का र्थे मा क्षि य स ग ल प वि वा ना य स व च्चि
 त्रि प र्ण म सु ॥ न म स्का रं क त्वा ॥ स्म या क ॥ ७ या च कं त प्ये ॥ ॥
 वा क्त व लि व लि कृ षा ॥ प शु त र्थे ॥ ॥ गन्ध प वि र मा ल ॥ उग्र च उ
 मा ऊ गु लि ६ उं २१ गु नि ७ ॥ पू ज न ॥ ॥ अथ की मा नी जा ग न र्ण
 गन्ध प वि र मा ल ॥ की मा नी या ऊ गु लि ६ उं २१ गु नि ७ ॥ ग ल या क
 कि ति ॥ ॥ व द् क या क कि ति ॥ ॥ रुं उ या क कि ति ॥ ॥ कं कि ति या

श्रीगुलि ४३३ एगुनिका ॥ अजतजयकार ॥ अरुगन्नादि ॥ ॐ नि
 कोमात्रीया ॥ ॥ अलिधक वेन्दन सिन्दूर सगुली आली बुदि ॥ म
 य ॥ ॥ नालीजानवरी ॥ ॥ यथा लकि रोह ॥ करकस ककिनि ॥
 करकान ॥ ॥ ॐ निवविशानादनविधि समाक ॥ ॥ ॥
 रतूर्यमान विधिधर्म ॥ संकुष्टावावयलन ॥ नियमपूरक विष्णुमिपनमंगनवा
 रुया ॥ मल ॥ सर्वकानेयालिगायसर्वनवाधिपायन कीनम ॥ लपनवम
 यथा ॥ कपूरवृक्षमर्थववाला मासीउचन्दन ॥ पुनर्पचसमायूक पविशना
 रुनलेपिने ॥

व४

नानावागनन ॥ पाग ॥ स्नानच ह्यार्गकूर्याज ॥ निर्माल्यविसृजन
 ॥ सर्वनिर्माल्यमादाय पाण्डु ॥ पूरिकावृक्षाकायावविशेलन
 निलयदवाचनेकृत्वा ॥ कुरुतिम सिंधुवर्षा पिण्ड ॥ कुरुतिमपिका
 दवाय ॥ निर्माल्यदवर्ग ॥ १४ पूजायाय ॥ चतुस्त्राउने मित्रिक
 ॥ क ॥ ॐ अयादि ॥ सूर्यार्घ्य ॥ पिण्डवाचमा ॥ ३ ॥ ॐ अखलमलुह मि
 गुननमस्कार ॥ करवृक्षागन्यास ॥ विष्णुषवकुमकुलन्यास ॥
 ३ ॥ ॐ अस्त्रायरुद्र ॥ करवाधन ॥ ३ ॥ ॐ वाददयादि षष्ठमन्यास ॥

कनककुंगन्यासः ॥ ॥ गनजलपागजूर्ययागपूजा ॥ हस्तशुद्धिः
आत्मपूजा ॥ मालनीयः ॥ ०७ ॥ पंचवलिः ॥ मुखलभधनं ॥ धीसर्वको
शिवलिः ॥ ॥ नगध्वजपूजनं ॥ नंदजुआधिवानादिः ॥ नंदजयद्रासना
यनमः ॥ यायू ॥ ध्यानं ॥ नंदजुलभमडुग नूपेतु कूलचक्रादहासिनी
द्विउडेकमूर्खस्यामं स्वस्मत्सुनविलिधाहिनं ॥ हागगयाविग
त्रोदं पद्ममः ॥ विविक्तयः ॥ निर्माल्यं सर्वदेवानां च लभय वि
निवदयः ॥ ॥ मूलमकुं वपाद्याद्याचमनचन्दनाक्षगपूर्यं जी

वलायनमः ॥ यायू ॥ गतमंग ॥ नंदजुवांवांरूं वूं ॥ यलुध्वजमहाहरे
वायपाइकां ॥ ३ ॥ नंदजुवांवांरूं वूं ॥ चरु ॥ न्वनीमहाहरेवपीपा
इकांपूजायामि ३ ॥ नंदजुवांहद ॥ यादि ॥ षउडु ॥ ॥ नंदजु
हरेसं ॥ श्रीकूलचक्रध्वजश्रीकूलचक्रध्वनीगकि स हिगाय ॥ प
विगक पाइकां ॥ कंकि निर्वृत्तयः ॥ ॥ पविगक उं २ ॥ यं पि समव
पविगक यायू ॥ चह्रदयादिषठं गनसंपूज ॥ वलिः ॥ आवाहना
दि ॥ विगूलथानिमूडा ॥ महावलि विय ॥ धूपदीपनैवेद्यसंकल्प सि

द्विवसु ॥ मधुलजयस्मात् ॥ लंज ॥ गह्र हि नद्यवस्मादि मलिवत्ता
 दिरुषर्षी ॥ विहाय ॥ शेष निमोर्त्य पुदकं पुक्क जाह्नवा ॥ लंज ॥ चोक्षान्ते
 पादादिर्गाथालं सुग्विलयनं ॥ निमोर्त्य राजनं पुर्त्य च धुय विनिव
 दय ॥ ॐ आयाहि कूलये धुमी मधुलं निष्ठनायक ॥ यथा विष्णोर्मा
 नं धरे नव संप्रसादिनं ॥ ततः ॥ शीर्षं मया दलं गृह्णन्तु हस्तं वंगसाधुस्य
 धुधनं वधि मूढानि पदं यि ॥ पूजादि विधि भवतु य विर्गं वसम धिर्गं
 अणन्यादि ॥ अमुन यधु विसर्जने ॥ लंज ॥ व ४ अमुन यधु ॥ ॥

नदीपवाहनं ॥ स्नानं कृत्वा ॥ गृहागमपादयशालनं ॥ ॥ पुनर्विद्यापी
 रिलयंगत ॥ ॥ ततः ॥ धारा न्यासादि ॥ कर्माचिनं ॥ ग्रासः ॥ वलिविस
 र्जने याय ॥ सूर्यसादि ॥ ॥ वलिथवश्चायसंश्रुय ॥ यजमान
 स्वस्तिकसंस्तुताव ॥ अरिषकादिविय ॥ चन्दन सिद्धमोहनी सुगु
 खान्तागीर्वाय विय ॥ पुनिष्टा ॥ तस्य मान विधि वाद्य विष्णुदि ॥
 कर्म जजमानकाय ॥ यथमग कि समयराश्रि ॥ कर्तव्यकार्क ॥
 लंजि श्री यधु मो न्नाय इष्टकमय विष्णव न्नाहन विधि समाप्य ॥

दाक्षिणा
 दीपदशा ॥ ॥

